Journal of Socio-Educational & Cultural Research
International Journal of Arts & Social Sciences
Peer Reviewed Refereed Journal
Published by Srijan Research Foundation, Varanasi India
Vol.12, N. 27, December 2026
DOI: https://doi.org/10.68868/14Js15aK36
www.jsecrjournal.in

असगर वजाहत के नाटकों में सांप्रदायिक सद्भाव और सामाजिक चेतना

डॉ मुन्ना कुमार
सहायक प्रोफेसर हिंदी विभाग
एम एच एम कॉलेज सोनबरसा, सहरसा बिहार- 852129

सारांश

समकालीन हिंदी नाटक में असगर वजाहत का रचनात्मक व्यक्तित्व सामाजिक सरोकारों, मानवीय संवेदना, सांप्रदायिक सद्भाव और लोकतांत्रिक चेतना के कारण विशिष्ट महत्त्व रखता है। उन्होंने इतिहास, मिथक, धर्म, राजनीति और समकालीन सामाजिक जीवन से जुड़े प्रश्नों को नाटकीय अभिव्यक्ति प्रदान करते हुए मनुष्य को अपनी रचना के केंद्र में रखा है। उनके जिस लाहौर नई देख्या ओ जम्याई नई, गोडसे@गांधी.कॉम, ईश्वर-अल्लाह, समिधा, वीरगति, इन्ना की आवाज आदि नाटकों में सांप्रदायिकता, धार्मिक कट्टरता, राजनीतिक स्वार्थ, हिंसा, सामाजिक विषमता और मानवीय संबंधों के प्रश्न प्रमुखता से उभरते हैं। विशेष रूप से जिस लाहौर नई देख्या ओ जम्याई नई में भारत-विभाजन की त्रासदी के बीच हिंदू-मुस्लिम संबंधों और साझा संस्कृति को केंद्र में रखा गया है। गोडसे@गांधी.कॉम में गांधी और गोडसे के वैचारिक द्वंद्व के माध्यम से हिंसा और अहिंसा, धर्म और राजनीति तथा राष्ट्र की अवधारणा पर प्रश्न उठाए गए हैं। ईश्वर-अल्लाह धार्मिक आस्था को मनुष्यता से जोड़ता है। इस प्रकार वजाहत का नाट्य-संसार सांप्रदायिक विभाजन के विरुद्ध मानवीय एकता तथा सामाजिक चेतना का सशक्त माध्यम बनता है।

बीज शब्द: असगर वजाहत, हिंदी नाटक, सांप्रदायिक सद्भाव, सामाजिक चेतना, धर्मनिरपेक्षता, मानवता, विभाजन, गांधी, इतिहास।

प्रस्तावना

हिंदी नाटक का आधुनिक विकास केवल मनोरंजन की दृष्टि से नहीं हुआ है, बल्कि उसने अपने समय के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रश्नों को भी अभिव्यक्ति दी है। आधुनिक हिंदी नाटककारों ने रंगमंच को समाज के अंतर्विरोधों से संवाद करने का माध्यम बनाया। इसी परंपरा में असगर वजाहत का नाम महत्त्वपूर्ण है। वे कहानी, उपन्यास, नाटक, लघुकथा और पटकथा सहित विभिन्न साहित्यिक विधाओं में सक्रिय रहे हैं। एनसीईआरटी की सामग्री में भी उनकी प्रमुख नाट्य-कृतियों में फिरंगी लौट आए, इन्ना की आवाज, वीरगति, समिधा, जिस लाहौर नई देख्या और अकी आदि का उल्लेख मिलता है तथा उनकी भाषा में गंभीरता, भावाभिव्यक्ति और व्यंग्यात्मकता को रेखांकित किया गया है।असगर वजाहत के नाटकों की सबसे उल्लेखनीय विशेषता यह है कि वे जटिल सामाजिक प्रश्नों को सीधे उपदेशात्मक ढंग से प्रस्तुत करने के बजाय पात्रों, संवादों, परिस्थितियों और नाटकीय टकरावों के माध्यम से सामने लाते हैं। उनका साहित्य धर्म के विरोध में नहीं, बल्कि धर्म के नाम पर पैदा होने वाली कट्टरता, हिंसा और विभाजनकारी मानसिकता के विरोध में दिखाई देता है। उनके यहाँ हिंदू-मुस्लिम संबंध केवल राजनीतिक विमर्श का विषय नहीं हैं, बल्कि भारतीय समाज की साझी सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा हैं।उनके नाटकों में सांप्रदायिकता का प्रश्न इतिहास से जुड़ता है, किंतु उसका प्रभाव वर्तमान तक आता है। विशेष रूप

से भारत-विभाजन की पृष्ठभूमि में रचित जिस लाहौर नई देख्या ओ जम्याई नई में एक हिंदू वृद्धा और मुस्लिम शरणार्थी परिवार के संबंधों के माध्यम से मनुष्य की पहचान को धर्म की सीमाओं से ऊपर उठाने का प्रयास किया गया है। इस नाटक पर उपलब्ध आलोचनात्मक सामग्री भी इसे सांप्रदायिकता, कट्टरता और धार्मिक उन्माद के विरुद्ध तथा हिंदू-मुस्लिम एकता और भाईचारे के पक्ष में रचना के रूप में देखती है।

1. असगर वजाहत की नाट्य-दृष्टि और सामाजिक सरोकार

असगर वजाहत के नाटकों की सामाजिक चेतना उनके विषय-चयन से ही स्पष्ट हो जाती है। वे ऐसे प्रसंगों को नाट्य-विषय बनाते हैं जिनके पीछे व्यापक सामाजिक अर्थ छिपे होते हैं। धर्म, जाति, राजनीति, हिंसा, सत्ता, इतिहास और आम आदमी के जीवन की समस्याएँ उनके नाटकों में परस्पर जुड़ी हुई दिखाई देती हैं।उनके नाटकों में सामाजिक चेतना का अर्थ केवल सामाजिक समस्याओं का उल्लेख करना नहीं है। वे दर्शक को समस्या के कारणों और उसके मानवीय परिणामों पर विचार करने के लिए प्रेरित करते हैं। उनकी रचनात्मक पद्धति में व्यंग्य और संवाद का महत्त्व विशेष है। गंभीर प्रश्नों को वे कई बार सहज, बोलचाल की भाषा और हास्य-व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। यही कारण है कि उनका नाटक विचारप्रधान होने के बावजूद केवल भाषण या वैचारिक वक्तव्य नहीं बनता।वजाहत के नाटकों में आम आदमी की संवेदना महत्त्वपूर्ण है। सत्ता और राजनीति की बड़ी घटनाओं का मूल्यांकन वे इस आधार पर करते हैं कि उनका प्रभाव सामान्य मनुष्य के जीवन पर क्या पड़ता है। इस दृष्टि से उनका नाट्य-साहित्य सामाजिक चेतना को मानवीय चेतना से जोड़ता है।

2. 'जिस लाहौर नई देख्या ओ जम्याई नई' में सांप्रदायिक सद्भाव

असगर वजाहत के सांप्रदायिक सद्भाव संबंधी नाटकों में जिस लाहौर नई देख्या ओ जम्याई नई का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। नाटक की पृष्ठभूमि भारत-विभाजन है। विभाजन के बाद उत्पन्न विस्थापन, हिंसा और धार्मिक तनाव के बीच लाहौर में रहने वाली एक हिंदू वृद्धा और वहाँ आए मुस्लिम शरणार्थी परिवार के बीच संबंधों को नाटक का केंद्र बनाया गया है।नाटक का महत्त्व इस बात में है कि इसमें विभाजन को केवल राजनीतिक घटना के रूप में नहीं देखा गया है। विभाजन मनुष्यों के बीच संबंधों को किस प्रकार प्रभावित करता है, यह नाटक का केंद्रीय प्रश्न बन जाता है। एक ओर धर्म और राजनीति के नाम पर विभाजन है, दूसरी ओर सदियों से विकसित साझा संस्कृति और मानवीय संबंध हैं।नाटक में लाहौर केवल भौगोलिक स्थान नहीं रह जाता, बल्कि साझा सांस्कृतिक स्मृति का प्रतीक बन जाता है। घर, पड़ोस, भाषा, खान-पान और पारिवारिक संबंध धार्मिक सीमाओं से अधिक व्यापक मानवीय संबंधों को सामने लाते हैं।नाटक का मूल संघर्ष हिंदू और मुस्लिम समुदायों के बीच संघर्ष मात्र नहीं है; वास्तविक संघर्ष कट्टर मानसिकता और मानवीय चेतना के बीच है। इसी कारण नाटक का संदेश किसी एक समुदाय के पक्ष में नहीं, बल्कि मनुष्यता के पक्ष में जाता है।

इस नाटक पर प्रकाशित आलोचनात्मक अध्ययन में भी यह निष्कर्ष सामने आता है कि वजाहत ने सांप्रदायिकता, कट्टरता और धार्मिक उन्माद पर प्रहार करते हुए हिंदू-मुस्लिम एकता और भाईचारे को महत्त्व दिया है। उसी अध्ययन में जयदेव तनेजा की व्याख्या के आधार पर देश, धर्म और जाति के नाम पर होने वाली हिंसा के सामने प्रेम, भाईचारे और इंसानियत की शक्ति को रेखांकित किया गया है।इस प्रकार जिस लाहौर नई देख्या ओ जम्याई नई में सांप्रदायिक सद्भाव कोई बाहरी उपदेश नहीं है, बल्कि नाटक के कथानक और पात्रों के जीवनानुभव से निर्मित होता है। नाटक के छठे दृश्य में [1]"**तभी तो एक रात हमीदा बेगम को कान में दर्द होता है यह बात रतन की मां को पता चलता है, वह पूछने आती है, कल रात किसे कान में दर्द हुआ। तनु कहती है अम्मा को कान में दर्द हुआ था।रतन की मां घूमते हुए हमीदा बेगम के पास आती है। हमीदा बेगम उसे संबोधन में आदाब बुआ कहती है इस पर रतन की मां कहती है बेटी तू मेरी पुत्र दे बराबर है मां की बुलाया कर मेनू**"

3. 'गोडसे@गांधी.कॉम' में हिंसा और अहिंसा का वैचारिक द्वंद्व

असगर वजाहत का गोडसे@गांधी.कॉम आधुनिक हिंदी नाटक में इतिहास और वर्तमान के संवाद का उल्लेखनीय उदाहरण है। नाटक गांधी और गोडसे के विचारों को आमने-सामने रखकर हिंसा, अहिंसा, धर्म, राष्ट्र और राजनीति जैसे प्रश्नों पर विचार करता है।यहाँ गांधी केवल इतिहास की एक मूर्ति नहीं हैं और गोडसे केवल इतिहास की एक घटना का नाम नहीं रह जाता। दोनों के विचारों के माध्यम से राष्ट्र और समाज के स्वरूप पर प्रश्न खड़े किए जाते हैं। नाटक का महत्त्व इस बात में है कि वह पाठक या दर्शक को विचारों की प्रकृति और उनके सामाजिक परिणामों पर विचार करने का अवसर देता है। गोडसे@गांधी.कॉम में गांधी की अहिंसा के सामने हिंसात्मक राजनीतिक दृष्टि रखी जाती है। नाटक इस प्रश्न को भी उठाता है कि क्या किसी राजनीतिक या धार्मिक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हिंसा को उचित ठहराया जा सकता है। इस संदर्भ में नाटक धार्मिक आस्था और राजनीतिक हिंसा के बीच अंतर करने की आवश्यकता पर बल देता है।इस नाटक की सामाजिक चेतना का एक पक्ष यह भी है कि इतिहास को केवल गौरव या अपराधबोध की वस्तु बनाकर छोड़ देने के बजाय उससे वर्तमान के लिए प्रश्न पैदा किए जाएँ। इस दृष्टि से नाटक इतिहास की पुनर्व्याख्या करता है। [3]**गांधी जी कहते हैं ,आदमी परमात्मा की सबसे बड़ी रचना है उसे समझने में समय लगता है**

4. 'ईश्वर-अल्लाह' में धर्म और मनुष्यता

असगर वजाहत के नाटकों में धार्मिक सद्भाव की चर्चा ईश्वर-अल्लाह के बिना अधूरी है। नाटककार यहाँ धर्म की मूल मानवीय भावना और धार्मिक कट्टरता के बीच अंतर को सामने लाते हैं।धर्म का उद्देश्य यदि मनुष्य को नैतिकता, प्रेम, करुणा और सह-अस्तित्व की ओर ले जाना है तो धर्म के नाम पर हिंसा और घृणा की स्थिति मूल धार्मिक भावना के विपरीत हो जाती है। वजाहत इसी अंतर्विरोध को नाटकीय रूप में प्रस्तुत करते हैं।ईश्वर-अल्लाह पर प्रकाशित अध्ययन में धर्म के नाम पर पैदा होने वाली हिंसा और अंधविश्वास के प्रश्नों को रेखांकित किया गया है। अध्ययन में ईश्वर-अल्लाह के पृष्ठ 16-18 के साथ अन्य वैचारिक ग्रंथों के संदर्भ भी दिए गए हैं।नाटक का शीर्षक ही अपने आप में सांस्कृतिक समन्वय का संकेत देता है। 'ईश्वर' और 'अल्लाह' दो अलग धार्मिक परंपराओं में प्रयुक्त नाम हैं, लेकिन नाटककार इनके माध्यम से विभाजन के बजाय साझा मानवीय चेतना की ओर संकेत करते हैं।इस प्रकार धार्मिक पहचान को नकारे बिना धार्मिक सह-अस्तित्व की संभावना स्थापित करना वजाहत के नाट्य-साहित्य की प्रमुख विशेषता है।

5. 'समिधा' में सामाजिक अंतर्विरोध

समिधा में भी सामाजिक जीवन के अनेक प्रश्न सामने आते हैं। वजाहत की नाट्य-दृष्टि में समाज केवल पृष्ठभूमि नहीं है, बल्कि वह नाटक की सक्रिय शक्ति है। व्यक्ति की समस्याएँ उसके सामाजिक परिवेश से जुड़ी हुई हैं।समिधा पर उपलब्ध अध्ययन में नरेंद्र मोहन, निर्मल वर्मा, मृणाल पांडे और शंभूनाथ का संदर्भ दिया गया है।वजाहत के सामाजिक सरोकारों की विशेषता यह है कि वे समाज में मौजूद धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक अंतर्विरोधों को व्यक्ति के जीवन से जोड़ते हैं। इसीलिए उनके नाटकों में सामाजिक चेतना केवल सामूहिक स्तर पर नहीं, बल्कि व्यक्तिगत संबंधों में भी दिखाई देती है। **समिधा** नाटक के दृश्य दो एक प्रसंग में सुखनंदाआचार्य डी पी दोरिया से बात कर रहे होते हैं [2]**"सुखनंदाचार्य कहते हैं पर आप मालिक हैं प्रति उत्तर में डी पी दोरियां कहते हैं महाप्रभु अब आप अंबिका प्रसाद नहीं है और मालिक तो मैं आपका हो ही नहीं सकता आपने तो मेरे ऊपर उपकार किया है जो यहां पधारे"।**

6. 'वीरगति' और राजनीतिक-सामाजिक व्यंग्य

असगर वजाहत के नाटकों में सामाजिक चेतना का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम व्यंग्य है। वीरगति में सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था की विसंगतियों को व्यंग्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।व्यंग्य का उद्देश्य केवल हँसाना नहीं है। वह व्यवस्था के भीतर छिपी विसंगतियों को उजागर करता है। जब राजनीतिक या सामाजिक संस्थाएँ अपने मूल उद्देश्य से भटकती हैं, तब व्यंग्य उनकी वास्तविक स्थिति को अधिक प्रभावशाली ढंग से सामने ला सकता है।वीरगति पर उपलब्ध अध्ययन में असगर वजाहत के आठ नाटक के पृष्ठ 109-110,

115, 129 तथा 134-135 आदि के संदर्भ दिए गए हैं।इस दृष्टि से वजाहत का व्यंग्य सामाजिक चेतना का उपकरण बन जाता है। वे पाठक को केवल किसी समस्या की सूचना नहीं देते, बल्कि उस पर प्रश्न करने की स्थिति में ले जाते हैं।

7. सांप्रदायिकता के विरुद्ध मानवीय दृष्टि

असगर वजाहत के नाटकों में सांप्रदायिकता को केवल धार्मिक संघर्ष के रूप में नहीं देखा गया है। उसके पीछे राजनीति, सत्ता, अफवाह, भय और सामाजिक अविश्वास की भूमिका भी दिखाई देती है।सांप्रदायिकता की सबसे बड़ी समस्या यह है कि वह व्यक्ति को उसकी व्यक्तिगत पहचान से हटाकर एक सामूहिक धार्मिक पहचान में सीमित कर देती है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति का मूल्यांकन उसके कर्म और मानवीय गुणों के आधार पर न होकर उसकी धार्मिक पहचान के आधार पर होने लगता है।वजाहत इस मानसिकता का प्रतिरोध करते हैं। उनके पात्रों में मनुष्य पहले आता है और धार्मिक पहचान बाद में। जिस लाहौर नई देख्या ओ जम्याई नई इसका सर्वाधिक स्पष्ट उदाहरण है।साहित्यिक आलोचना में भी वजाहत के साहित्य को सामाजिक सौहार्द और मानवीय संबंधों के संदर्भ में देखा गया है। उपलब्ध अध्ययन में उनके साहित्य को विभिन्न व्यक्तियों, रीति-रिवाजों और सामाजिक संबंधों के बीच सौहार्द से जोड़कर देखा गया है।

8. साझा संस्कृति और भारतीयता

वजाहत की सांप्रदायिक सद्भाव की दृष्टि का एक महत्त्वपूर्ण आधार भारतीय समाज की साझा संस्कृति है। भारतीय संस्कृति का निर्माण विभिन्न धर्मों, भाषाओं, जातियों और समुदायों के दीर्घकालीन सह-अस्तित्व से हुआ है।उनके नाटकों में भाषा भी इसी सांस्कृतिक साझेदारी का माध्यम बनती है। हिंदी, उर्दू और बोलचाल की भाषिक अभिव्यक्तियाँ उनके पात्रों के संवादों में सहज रूप से आती हैं। इससे नाटक में कृत्रिमता कम होती है और विभिन्न सामाजिक समुदायों के बीच भाषिक निकटता दिखाई देती है।जिस लाहौर नई देख्या ओ जम्याई नई में लाहौर की संस्कृति और विभाजन की त्रासदी के माध्यम से साझा विरासत का प्रश्न उठाया जाता है। इसी कारण नाटक का प्रभाव केवल विभाजन की कथा तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वर्तमान समाज में सांस्कृतिक सह-अस्तित्व के प्रश्न तक पहुँचता है।असगर वजाहत के नाटकों में सांस्कृतिक चेतना पर प्रकाशित शोध में भी उनके नाटकों को हिंदू-मुस्लिम एकता और भारतीय सांस्कृतिक चेतना के संदर्भ में देखा गया है।

9. भाषा और संवाद : सामाजिक चेतना का माध्यम

वजाहत के नाटकों की भाषा सरल, संवादधर्मी और जनसामान्य के निकट है। एनसीईआरटी की सामग्री भी उनकी भाषा में गंभीरता, सशक्त भावाभिव्यक्ति और व्यंग्यात्मकता के साथ मुहावरों तथा तद्भव शब्दों की सहजता को रेखांकित करती है।

उनके संवादों में विचार और जीवन दोनों साथ-साथ चलते हैं। पात्र केवल लेखक के विचार बोलने वाले माध्यम नहीं हैं; वे अपनी सामाजिक पृष्ठभूमि के अनुसार बोलते हैं। इसी कारण सांप्रदायिकता जैसे गंभीर विषय भी संवादों के माध्यम से स्वाभाविक रूप से सामने आते हैं।वजाहत के नाटकों में भाषा स्वयं सांस्कृतिक संवाद का माध्यम बन जाती है। हिंदी और उर्दू के शब्दों का सहज प्रयोग भारतीय समाज की बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक प्रकृति को व्यक्त करता है।

10. इतिहास और वर्तमान का संबंध

असगर वजाहत इतिहास का उपयोग केवल अतीत का वर्णन करने के लिए नहीं करते। वे इतिहास को वर्तमान के प्रश्नों से जोड़ते हैं। जिस लाहौर नई देख्या ओ जम्याई नई में विभाजन का इतिहास वर्तमान के सांप्रदायिक संबंधों के संदर्भ में अर्थवान बनता है। गोडसे@गांधी.कॉम में गांधी और गोडसे से जुड़ा इतिहास समकालीन राजनीतिक और नैतिक प्रश्नों से जुड़ता है।इस प्रकार इतिहास उनके लिए चेतावनी और आत्ममंथन का माध्यम है। इतिहास को समझने का उद्देश्य अतीत की घटनाओं को दोहराना नहीं, बल्कि उनसे वर्तमान समाज के लिए सीख ग्रहण करना है।यहाँ नाटककार की सामाजिक चेतना स्पष्ट दिखाई देती है। वे दर्शक को इतिहास के साथ भावनात्मक रूप से जोड़ते हैं और फिर वर्तमान पर विचार करने के लिए प्रेरित करते हैं।

11. सामाजिक चेतना और लोकतांत्रिक मूल्य

असगर वजाहत के नाटकों में सामाजिक चेतना का संबंध लोकतांत्रिक मूल्यों से भी है। लोकतंत्र केवल चुनाव या राजनीतिक संस्थाओं का नाम नहीं है। इसके लिए सहिष्णुता, असहमति का सम्मान, धार्मिक स्वतंत्रता, सामाजिक समानता और मनुष्य की गरिमा आवश्यक है।जब समाज में धार्मिक पहचान के आधार पर घृणा बढ़ती है, तब लोकतांत्रिक सामाजिक संरचना कमजोर होती है। वजाहत के नाटक इसी खतरे की ओर संकेत करते हैं।उनके नाटकों में संवाद की संस्कृति महत्त्वपूर्ण है। विरोधी विचारों को आमने-सामने रखकर वे पाठक-दर्शक को विचार करने का अवसर देते हैं। यह प्रवृत्ति नाटक को लोकतांत्रिक विमर्श का माध्यम बनाती है।

12. नाटक और रंगमंचीयता

असगर वजाहत का नाटक केवल पढ़ने के लिए नहीं है। उनकी रचनाओं में संवाद, दृश्य, पात्र और मंचीय परिस्थिति का महत्त्व है। इसलिए उनके सामाजिक विचार रंगमंच पर सामूहिक अनुभव का रूप ग्रहण करते हैं।एनसीईआरटी की सामग्री में जिस लाहौर नहीं देखा को उन हिंदी नाटकों में शामिल किया गया है जिनका मंचन व्यापक रूप से हुआ है।रंगमंच की सामूहिकता सांप्रदायिक सद्भाव के संदेश को और प्रभावी बनाती है। दर्शक किसी एक पात्र की पीड़ा को देखते हुए स्वयं को उससे जोड़ सकता है। इस प्रकार साहित्यिक पाठ सामाजिक अनुभव में परिवर्तित हो जाता है।

निष्कर्ष

असगर वजाहत के नाटकों का अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि सांप्रदायिक सद्भाव और सामाजिक चेतना उनके नाट्य-साहित्य के केंद्रीय सरोकारों में हैं। वे सांप्रदायिकता का प्रतिरोध केवल राजनीतिक भाषण के माध्यम से नहीं करते, बल्कि मानवीय संबंधों, साझा संस्कृति, इतिहास और सामाजिक जीवन के माध्यम से करते हैं।जिस लाहौर नई देख्या ओ जम्याई नई में विभाजन की त्रासदी के बीच हिंदू-मुस्लिम संबंधों की मानवीयता सामने आती है। गोडसे@गांधी.कॉम हिंसा और अहिंसा के वैचारिक द्वंद्व को प्रस्तुत करता है। ईश्वर-अल्लाह धर्म के मानवीय पक्ष और धार्मिक कट्टरता के बीच अंतर स्थापित करता है। समिधा तथा वीरगति जैसे नाटकों में सामाजिक और राजनीतिक अंतर्विरोधों को विभिन्न रूपों में अभिव्यक्ति मिलती है।वजाहत के नाटकों में मनुष्य की पहचान उसकी धार्मिक पहचान से बड़ी है। उनकी दृष्टि में समाज की वास्तविक शक्ति सह-अस्तित्व, संवाद, प्रेम, करुणा और पारस्परिक सम्मान में निहित है। यही कारण है कि उनका नाट्य-साहित्य केवल सांप्रदायिक सद्भाव का साहित्य नहीं है, बल्कि सामाजिक आत्ममंथन का साहित्य भी है।

उनकी रचनाएँ पाठक और दर्शक को यह सोचने के लिए प्रेरित करती हैं कि धर्म मनुष्य को जोड़ने वाला माध्यम कैसे बन सकता है, इतिहास से वर्तमान के लिए क्या सीखा जा सकता है और सामाजिक विभाजन के बीच मानवीय संबंधों को कैसे बचाया जा सकता है। इस अर्थ में असगर वजाहत समकालीन हिंदी नाटक में सामाजिक चेतना, मानवीयता और सांस्कृतिक सह-अस्तित्व के महत्त्वपूर्ण नाटककार के रूप में सामने आते हैं।

संदर्भ-ग्रंथ सूची

1.वजाहत, असगर, असगर वजाहत के नाटक 'अन न्य प्रकाशन 2022' जिस लाहौर नई देख्या ओ जम्याई नई'—पृ. 233

2.समिधा—पृ. 157,

3.वजाहत, असगर, 'गोडसे@गांधी.कॉम,' भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2013, पृ. 13,

4.तनेजा, जयदेव, 'नई रंग-चेतना और हिन्दी नाटककार', संदर्भित अंश, पृ. 191। जिस लाहौर... के संदर्भ में प्रकाशित आलोचनात्मक लेख में इसका उल्लेख है।

5.रस्तोगी, गिरिराज, 'बीसवीं शताब्दी का हिन्दी नाटक और रंगमंच', संदर्भित संस्करण, पृ. 186।

6.भारती, धर्मवीर, 'मानव मूल्य और साहित्य', संदर्भित अंश, पृ. 74।

7.श्रोत्रिय, प्रभाकर, 'समय समाज साहित्य', संदर्भित अंश, पृ. 99।

8.वर्मा, दिनेशचंद्र, 'समकालीन हिंदी नाटक एवं नाटककार', संदर्भित अंश, पृ. 46।